झारखण्ड राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक महासंघ

मेधा दुग्धवाणी

मेधा

अंक : 7 जुलाई-सितम्बर 2018

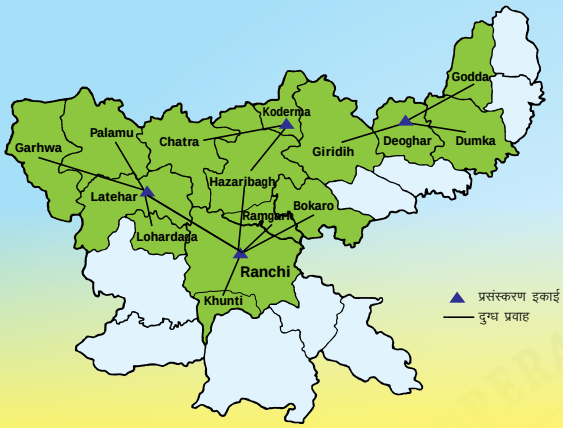

प्रिय पाठकगण,

पशुधन देश की अर्थव्यवस्था को विकसित करने में अहम भूमिका निभाता है साथ ही यह कृषि पर निर्भर रहने वाले परिवारों के लिए भी एक महत्वपूर्ण संपत्ति है इसलिए पशुपालन के क्षेत्र में वृद्धि केवल कृषि विकास को बनाये रखने के लिए ही नहीं अपितु ग्रामीण जनों की गरीबी को कम करने के लिए भी आवश्यक है। हमारे राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में जीवनयापन कर रहे अधिकतर ग्रामीणों के लिए पशुपालन एवं कृषि आय ही उनकी जीविका का एक आधार है। हाल ही के वर्षों में लोगों की खान पान में सुधार एवं उनके स्तर में तेजी से बदलाव आ रहा है जिससे दूध एवं दूध जन्य पदार्थों की मांग लगातार बढ़ रही है, अतः आने वाले वर्षों में पशुधन का महत्त्व और अधिक बढ़ने वाला है। इतना अधिक महत्व होने के बावजूद भी यदि सभी पशुधन की कम उत्पादकता के कारणों का विश्लेषण किया जाये तो पशुओं के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले चारे की पर्याप्त मात्रा में वर्षभर उपलब्धता न होना एक बड़े कारण के रूप में उभर कर सामने आता है। कम खर्च में पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए उन्हें अच्छा गुणवत्तायुक्त एवं पौष्टिक हरा चारा देना बहुत ही आवश्यक है। दुधारू पशुओं को यदि आवश्यकतानुसार संतुलित आहार देना है तो वर्ष भर उत्तम गुणवत्ता वाले हरे चारे का उत्पादन करना होगा। इसके लिए चारे की फसलों को समय पर लगाना तथा उचित दशा पर कटाई करना सम्मिलित है। इस अंक को प्रकाशित करते हुए मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है और मैं आशा करता हूँ कि आप सभी अपने विचारो में सकारात्मक परिवर्तन लाते हुए हरा चारा की खेती के साथ सफल डेयरी प्रबंधन की ओर अग्रसर होंगे क्योकि आने वाले वर्षों में गुणवत्तायुक्त हरा चारा की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित किये बिना डेयरी क्षेत्र में वांछित वृद्धि लगभग असंभव है।

प्रबंध निदेशक
झारखण्ड मिल्क फेडरेशन

डेयरी उत्पादन के मामले में चारा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है परन्तु हमारे राज्य में हरा चारा की खेती पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। हरा चारा में लगभग सभी प्रकार का पौष्टिक तत्त्व उपलब्ध होता है जिसकी उपलब्धता पशुओं को दिये जाने वाले अन्य आहारों की उपलब्धता के मुकाबले काफी सस्ती होती है। अच्छी गुणवत्तायुक्त चारा फसलों के कम उत्पादन की एक मुख्य वजह हमारे दुग्ध उत्पादकों का चारा को कम प्राथमिकता देना, अच्छा प्रशिक्षण एवं समर्पित जनशक्ति का आभाव है। प्रायः जमीन की सीमित उपलब्धता एवं आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण किसान पैसा प्राप्त करने हेतू नगदी फसल को अधिक क्षेत्र में एवं चारा फसलों को कम क्षेत्र में लगाते है, फिर भी निम्न पद्धतियाँ अपना कर हरा चारा के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है :

1. उत्तम गुणवत्ता वाले चारा बीज का चुनाव जिससे अधिक मात्रा में चारा उत्पादन हो सके।
2. ख़राब अथवा परती जमीन को सुधार कर मौसम अनुरूप उपयुक्त एकवर्षीय अथवा बहुवर्षीय चारा फसलों को उगाना।
3. पानी की उपलब्धता की स्थिति में दो मुख्य फसलों के बीच जब जमीन खाली पड़ी हो तो वहाँ कम अवधि वाली चारा फसलों को लगाकर चारा आपूर्ति की जा सकती है।
4. फलों के बगीचा में बची हुई खाली जमीन पर छाया में बढ़ने वाली चारा किस्मों का चयन कर लगाना चाहिए।
5. मेढ़ों पर चारा वृक्षों को लगाकर चारा की प्राप्ति के साथ–साथ मिट्टी के कटान को भी रोका जा सकता है।
6. मुख्य फसल को जानवरों से बचाने के लिए खेत के चारो तरफ चारा फसलों को लगाकर भी हरा चारा की प्राप्ति की जा सकती है।

झारखण्ड मिल्क फेडरेशन, होटवार में स्थित आधुनिक चारा उत्पादन एवं पशुपालन प्रदर्शन क्षेत्र :

पशुओं की उत्पादन क्षमता उनको दिए जाने वाले आहार पर निर्भर करती है, अतः कम लागत पर अधिक दुग्ध उत्पादन लेने के लिए यह आवश्यक है कि दुग्ध उत्पादकों द्वारा अपने पशुओं के लिए वर्ष भर हरा चारा की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। परन्तु झारखण्ड में इसकी उपलब्धता सीमित है क्योंकि झारखण्ड राज्य के दुग्ध उत्पादकों में अभी भी हरा चारा उत्पादन, मवेशियों के खान पान तथा उनके वैज्ञानिक तरीकों के प्रबंधन के बारे में जागरुकता व समुचित जानकारी का आभाव है।

दुग्ध उत्पादकों को सही और समुचित जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से जे.एम.एफ. द्वारा मेधा डेयरी, होटवार परिसर में देशी पशु प्रबंधन सह हरा चारा उत्पादन पर प्रत्येक्षण फ़ार्म को स्थापित किया गया है। इसकी स्थापना मुख्य रूप से गाय की देशी नस्लों जैसे राठी (राजस्थान), साहिवाल (पंजाब), गिर (गुजरात) एवं मेहसाना भैंस प्रजाति को झारखण्ड में बढ़ावा देने के लिए किया गया है। इसके साथ ही आधुनिक चारा फ़ार्म को भी स्थापित किया गया है। इस फार्म में विभिन्न प्रकार के हरे चारे का भी उत्पादन कर प्रदर्शन किया जाता है। मुख्यतः हरे चारे की बारहमासी

एवं मौसमी फसलों, जैसे मक्का, बाजरा, ज्वार, लोबिया (बोदी), नेपियर, मार्वेल घास, वेल्वेट बीन, अगस्ति, मोरिंगा, अपराजिता, जई, बरसीम, चारा चुकंदर, लुसर्न इत्यादि के उत्पादन पद्धति को दिखाया जाता है।

हरा चारा का संरक्षण :

पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता के दोहन के लिए दुधारू पशुओं को वर्षभर गुणवत्तायुक्त चारा खिलाना आवश्यक है। सामान्यतः सिंचाई की परिस्थिति में हरा चारा कुछ महीनों जैसे कि सितम्बर/अक्टूबर (मानसून मौसम) तथा फरवरी/मार्च (रबी मौसम में) अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है, जबकि इसकी उपलब्धता गर्मी के मौसम में सीमित होती है। अतः इसका "साईलेज" या "हे" बनाकर इसे संरक्षित कर सकते है। चारे की कमी के समय यह हरा चारा का एक अच्छा विकल्प बन सकता है क्योंकि इस प्रकार के संरक्षण की प्रक्रिया में इसमें हरे चारे के सभी गुण संरक्षित रहते है।

हे –

हे धूप में सुखाया हुआ हरा चारा होता है जिसमें नमी की मात्रा 15 प्रतिशत से कम होती है।

उपयुक्त फसलें – पतले तने वाली एकवर्षीय चारा फसलें जैसे रिजका, जई, मीठी सूडान घास एवं बहुवर्षीय फसलें जैसे गिनी घास, रोडस घास, अंजन घास, धामन घास इत्यादि।

यह दुधारू पशुओं के लिए पाचनशील होता है। उत्तम गुणवत्ता वाला "हे" बनाने के लिए, फसलों को 50% फूल वाली अवस्था पर कटाई करना चाहिए तत्पश्चात इसे सूखी सतह पर 5 सेमी. मोटी परत में धूप में सुखाने के लिये फैलाना चाहिए। 4 से 5 दिनों तक यही प्रक्रिया दोहरानी चाहिए और जब इसमें नमी की मात्रा 15 प्रतिशत से कम हो जाये तो इसका बण्डल बना कर सूखे स्थान पर भंडारित कर लेना चाहिए।

साइलेज : हरा चारा का अचार

यह पशुओं के लिए स्वादिष्ट और सुपाच्य हरा चारा का अचार होता है।

उपयुक्त फसलें– मक्का, बाजरा, ज्वार, जई, संकर नेपियर जिसमें कार्बोहाइड्रेट की मात्रा अधिक हो।

- उचित व्यवस्था में संरक्षित चारे का लगभग 2 वर्ष तक भंडारण किया जा सकता है।
- साइलेज को पक्का साईलो बंकर, साइलेज बैग, ड्रम में आसानी से बनाया जाता है।

बैग में साइलेज बनाने की विधि:

मक्का फसलों को दाना पकने की अवस्था में 1–2 सेमी. छोटे टुकड़ों में काटें।

कुट्टी किये गये चारे का भण्डारण साइलेज बैग में 30–45 सेमी की परत दर परत भरते हुए अच्छी प्रकार से दबाये।

कुट्टी किये गये चारे में भुट्टा न होने की स्थिति में प्रति 100 कि.ग्रा. चारा पर 1 कि.ग्रा गुड का घोल व 250 ग्राम नमक का छिड़काव करें।

भरने की प्रक्रिया जल्द से जल्द पूरी करें।

साइलेज बैग को ठीक प्रकार से बाँध कर बंद करे जिससे उसके अंदर की हवा निकल जाये।

साइलेज बनने की प्रक्रिया 45 दिनों में पूरी हो जाती है जिसे आवश्यकता पड़ने पर खोल कर खिलाया जा सकता है।

साइलेज बैग के खुलने के पश्चात यथाशीघ्र उसे खत्म कर दे।

हरा चारा उत्पादन हेतु सफलता की कहानी

हरा चारा उत्पादन से सम्बंधित विभिन्न प्रकार की जानकारियां दुग्ध उत्पादकों को झारखण्ड मिल्क फेडरेशन के चारा अधिकारियों द्वारा समय–समय पर प्रशिक्षण के माध्यम से दी जाती है जिससे वो हरा चारा के महत्व को समझकर इसे अपने पशुओं को रोजाना दिए जाने वाले आहार में सम्मिलित करे। बहुत से दुग्ध उत्पादकों ने हरे चारे की महत्ता को समझा और इसका विस्तार बड़े पैमाने पर किया। इन्हीं दुग्ध उत्पादकों में से एक है– सरस्वती देवी जो पुरियो गाँव (कटहलटोली) राँची जिला की निवासी है। जब सरस्वती देवी ने डेयरी व्यवसाय को कृषि के साथ–साथ अपनी आजीविका का सहायक स्रोत बनाना चाहा तो उनके सामने एक बड़ी समस्या थी अपने उत्पादन लागत को कम करते हुए अपने पशुओं के पूरे साल की आहार की मांग की पूर्ति करना। शुरुआती दौर में उन्होंने अपने घर के पास ही छोटी सी जमीन पर मौसम के अनुरूप हरा चारा उगाया और अपने पशुओं को खिलाया परन्तु जैसे–जैसे पशुओं की संख्या में वृद्धि हुई चारा की आपूर्ति में कमी होती गयी। खेती के लिए जमीन निर्धारित होने के कारण उन्होंने हरा चारा के विस्तार की बजाय पशुओं के वृद्धि तथा विकास के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थो की प्रतिपूर्ति ग्रामीण स्तर पर उपलब्ध संसाधन एवं पशु आहार से करनी चाही परन्तु कुछ ही दिनों बाद उन्हें ये आभास हो गया कि उनके उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही साथ ही पशुओं पर कोई अलग सकारात्मक प्रभाव देखने को नही मिला इसके विपरीत हरा चारा को उनके पशु बहुत ही चाव से खाते थे और ये स्वादिष्ट, सुपाच्य और सस्ते पड़ते थे। अतः सरस्वती जी ने ये फैसला किया कि वह चारा की विभिन्न किस्मों को बड़े स्तर पर लगायेंगी। आज सरस्वती जी ने लगभग 2 एकड़ से भी अधिक जमीन पर हरा चारा का विस्तार कर लिया है, जिससे उनके पूरे वर्ष की हरा चारा के समस्या का समाधान तो हुआ ही साथ ही उनके पशुओं के स्वास्थ्य एवं प्रजनन क्षमता में भी सुधार हुआ।

जनसमूहों की जागरूकता हेतु : डेंगू/ चिकनगुनिया से बचाव : कारण– यह मादा एडिस मच्छर के काटने से होता है।

सिर में दर्द	अचानक तेज बुखार	उल्टी होना, भूख न लगना एवं भोजन में अरुचि	शरीर (खासकर छाती एवं हाथों) में खसरा रोग जैसे चकते / दाने निकल जाना	जोड़ो, मांसपेशियों एवं आँखों के पिछले हिस्से में दर्द	रक्त का संचरण ठीक प्रकार से न होना एवं मसूड़ो से खून आना

नोट– यदि ऐसा लक्षण दिखाई दे तो जल्द से जल्द [illegible] में अथवा योग्य चिकित्सक से संपर्क करें।

बचाव के उपाय-

- घर में मच्छरों से बचने का उपाय करें, जहाँ तक संभव हो सके मच्छरदानी का प्रयोग करें। उपलब्धता की स्थिति में कीटनाशीयुक्त मच्छरदानी का प्रयोग उचित है।
- घर के आस–पास सफाई रखें। एडिस मच्छर अँधेरी जगह में भी रहते है अतः पलंग, चारपाई, दीवान एवं अन्य फर्नीचर के नीचे और पर्दों के पीछे की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- घर में एवं घर के आस–पास व्यर्थ का पानी जमा ना होने दे। जैसे सप्ताह में कम से कम एक बार पानी की टंकी, गमला, कूलर, फ्रिज ट्रे, फूलदान आदि की सफाई कर के सूखा लें।
- पीने के पानी को ढक कर रखें क्योंकि एडिस मच्छर साफ़ पानी में ही पनपते हैं।
- एडिस मच्छर मुख्यतः शरीर के निचले हिस्से में काटता है अतः जहाँ तक संभव हो शरीर को ढककर रखें। बच्चों को पूरी बाहँ का शर्ट, फूल पैंट एवं मोज़े पहना कर रखें।
- बुखार होने पर खूब पानी पीयें एवं आराम करें।

ध्यान दें-

- डेंगू/ चिकनगुनिया फैलाने वाले एडिस मच्छर दिन के समय में ही काटते हैं।
- बचाव ईलाज से बेहतर होता है अतः किसी भी बुखार को हल्का न लें, यह डेंगू/ चिकनगुनिया हो सकता है।

जे.एम.एफ. द्वारा विगत तिमाही में किये गये महत्वपूर्ण कार्य

जे.एम.एफ. द्वारा मेधा डेयरी के प्रांगण में 5 जून को पौधा रोपण कर विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया।

जे.एम.एफ द्वारा मेधा गोल्ड दूध को 3 मई को लांच किया गया जिसमे फैट की मात्रा 6% रखी गयी।

28 जून को जे.एम.एफ ने अपना पांचवा स्थापना दिवस मनाया।

राँची के विभिन्न स्कूलों के बच्चों द्वारा समय–समय पर मेधा डेयरी प्लांट का शैक्षणिक भ्रमण किया गया।

मेधा डेयरी में स्थापित कैटल फीड प्लांट का उद्घाटन एवं प्रोडक्ट डेयरी का शिलान्यांस माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास जी द्वारा 31 जुलाई को किया गया।

जे.एम.एफ द्वारा 15 अगस्त को होटवार डेयरी प्लांट एवं धुर्वा कार्यालय में 72वॉ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

411_(08-18) Annapurna Press 0651-2331800
e-mail : appranchi.1969@gmail.com

Published by : **Jharkhand State Co-operative Milk Producers' Federation Ltd.**
Ranchi–834004, Tel: 0651–2443055, Website : www.jmf.coop